

प्रियतम काव्य

प्रीतिरसावतार महाभावनिमग्न

श्रीराधा बाबा

की रस-ऊर्मियाँ


प्रीतिरसावतार महाभावनिमग्न
श्रीराधा बाबा


पूज्यपाद (भाई जी)
श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार जी
महाराज
प्रीतिरसावतार महाभावनिमग्न
श्रीराधा बाबा

॥ अथ श्रीप्रियतमकाव्यम् ॥

वन्दना

ललिताम्बामयीं ध्येयां रामदत्तापदाभिधाम् ।
आत्मस्वरूपिणीं साध्वीं वन्देऽहं धर्ममातरम् ।।1।।

मेरी आत्मरूपिणी, परम वन्दनीया, भगवती श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी
ललिताम्बा-स्वरूपा, रामदत्ता (रामदेई) नाम से जानी जाने वाली,
अपनी साध्वी धर्ममाता की मैं वन्दना करता हूँ।। १ ।। राधा ।।

कृष्णस्वरूपिणीं वन्दे हनुमद् गुप्तसन्ततिम् ।
नित्यां धर्मस्वसारं वै मञ्जुश्यामां सहोदराम् ॥२॥

श्रीहनुमानप्रसाद जी पोद्दार की सन्तति (पुत्री) सावित्री की मैं निश्चय ही
वन्दना करता हूँ, धर्मनिष्ठा ही जिसका सर्वस्व है, तथा जिसके रूप में
नीलसुन्दर कृष्ण ही मेरी चिरन्तन सहोदरा छोटी बहन
मञ्जुश्यामा बने हुए नित्य विराजित हैं।।२।। कृष्ण ।।







भगवती ललिताम्बा-स्वरूपिणी

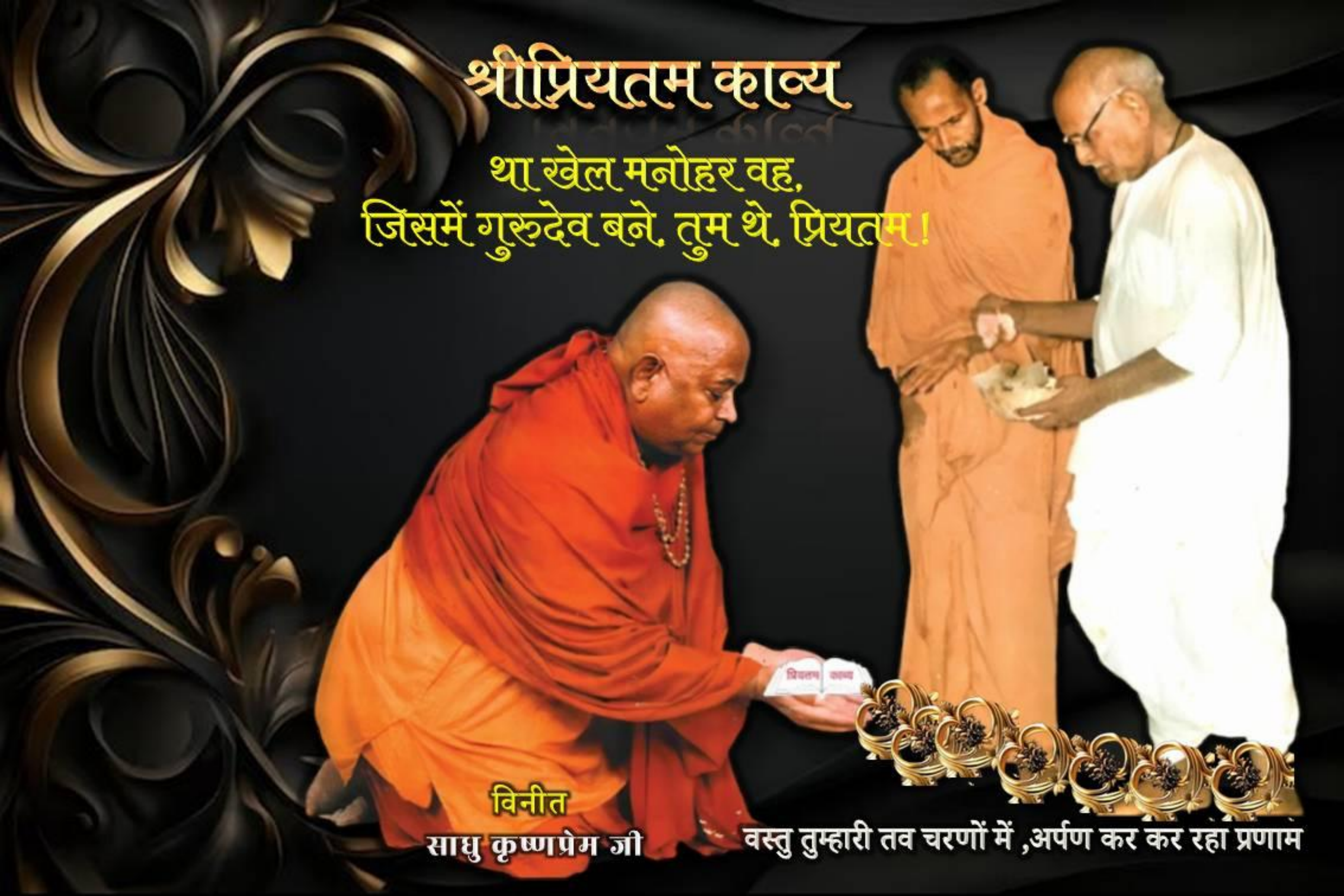
पू. माँ श्रीमती रामदेई जी,

पू. श्रीपोद्दार महाराज की धर्मपत्नी

राधानुजा श्रीमंजुश्यामाजी-स्वरूपिणी

अ.सौ. श्रीमती सावित्रीबाई जी,

पू. श्रीपोद्दार महाराज की सुपुत्री


श्रीप्रियतम काव्य
था खेल मनोहर वह,
जिसमें गुरुदेव बने, तुम थे, प्रियतम !
प्रियतम काव्य
विनीत
साधु कृष्णप्रेम जी
वस्तु तुम्हारी तव चरणों में ,अर्पण कर कर रहा प्रणाम

पू.गुरुदेव द्वारा अपने प्रियतम प्राणनाथ व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण से की हुई उपरोक्त प्रार्थना एवं उनके सर्वभवनसमर्थ, कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम् समर्थ प्रियतम श्रीकृष्ण द्वारा उन्हें दिये गये उत्तर के आधार को लेकर ही पू.गुरुदेव के स्वर में अपना निर्बल निरीह स्वर मिलाते हुए मैं सर्वथा अपात्र निम्न मङ्गलवचन कह रहा हूँ –

'पू.गुरुदेव श्रीराधाबाबा के भावजीवन के इस श्रुतिकाव्य में जो भी पाठक भावसहित अवगाहन, निमज्जन करेंगे, वे एक ऐसे अनिर्वचनीय परम दुर्लभ विलक्षण चिदानन्दमय महारस की उपलब्धि करेंगे, जो उनके समग्र विषय-व्यामोह को सदा के लिये मिटा देगा। मेरे पू. गुरुदेव श्रीराधाबाबा के भावजीवन इस प्रियतमकाव्य के पठन का यही माहात्म्य है। इसका अक्षर-अक्षर, इसके पूर्ण विराम, अर्ध विराम, अनुस्वार, चन्द्रविन्दुतक पूर्ण रसमय हैं। इसमें निरन्तर डूबनेवाले को दुर्लभ-से-दुर्लभ दिव्य देवभोगों के आनन्द से ही नहीं, परम तथा चरम वाञ्छनीय ब्रह्मानन्द से भी अरुचि हो जायगी। श्रीप्रिया-प्रियतम ही उसके सर्वस्व होकर उसमें बस जावेंगे और उसको अपना स्वेच्छाचालित लीलायंत्र बनाकर धन्य कर देंगे।'

विनीत

साधु कृष्णप्रेम जी

श्रीप्रियतम काव्य



प्रथम शतक



इन धुँधली आँखों से, सब कुछ मैं देख नहीं पाती, प्रियतम !
सपना-सा विश्व बने तुमको, मैं प्यार न दे पायी, प्रियतम !
था खेल मनोहर वह, जिसमें गुरुदेव बने तुम थे, प्रियतम !
करने बैठी हूँ अब पूजा, प्राणों में व्यथा लिये, प्रियतम !
।।१।।

हूँ वही, जिसे कहकर 'मेरे प्राणों की रानी', हे प्रियतम !
थे पकड़ लिये वे हाथ, लगी मेहँदी जिनमें थी, हे प्रियतम !
पर भग्न हुआ-सा था गृह वह, जिसमें रहती बाला, प्रियतम !
थी तम से परिपूरित रजनी, जब तुम आये थे, हे प्रियतम !
।।२।।



दीपक तक नहीं वहाँ था, कुछ कण थे रज के बिखरे, प्रियतम !
गोबर-मिट्टी से यद्यपि थी, अवनी लीपी पोती, प्रियतम !
ये सब कपाट, टूटे गवाक्ष के तथा द्वार के भी, प्रियतम !
वह पवन धूलि भरकर दुकूल में, लाया करता था,प्रियतम !
।। ३ ।।

उस कच्चे घर में रहकर भी, निर्मल थी वह बाला, प्रियतम !
था सका नहीं छू उसे, एक कण बाहर से आया, प्रियतम !
थी छिपी शक्ति उसमें, सहस्र पावक-पुञ्जों की, हे प्रियतम ।
सामर्थ्य नहीं थी कहीं किसी में, जो दूषित कर दे, प्रियतम !
।।४।।



उस पथ से जो जाते, पाते पर देख भग्न गृह ही, प्रियतम !
अवकाश कहाँ किसको था, जो भीतर जाकर देखें, प्रियतम !
है मात्र खण्डहर ही प्रायः, सबके मन में आता, प्रियतम !
वे थे राही, था लगा ध्यान, उनका पथ पर अपने, प्रियतम !
।।५।।

दल तथाकथित राजाओं का, ऋषियों का, मुनियों का, प्रियतम !
कुछ सिद्धों का भी आता था एवं गन्धर्वों का, प्रियतम !
पड़ती उस पर जो दृष्टि कहीं, उनकी पैनी-सी, हे प्रियतम !
वह भवन वस्तु बनता विराग अथवा विनोद की ही, प्रियतम !
।।६।।



कुछ थे विहङ्ग उसमें अवश्य, पर थे वे सब सोये, प्रियतम !
थे नीड़ सभी के भिन्न-भिन्न, सहचरी साथ में थी, प्रियतम!
उनका था वह संसार अलग, वे थे भूले उसमें, प्रियतम !
है कौन यहाँ बाला बसती, वे क्या कैसे जानें, प्रियतम !
।।७।।

वह रात नहीं थी चार पहर वाली, जो मिट जाती, प्रियतम !
हैं सब कहते अनादि उसको, जो पण्डित सच्चे हैं, प्रियतम !
होता है उसका अन्त, उसी के जीवन में, बस, हे प्रियतम !
जो रूप अनिर्वचनीय तथा अद्भुत अचिन्त्य देखे, प्रियतम !
।।८।।



इसलिये विहङ्गम सोये थे, पर थी जगती बाला, प्रियतम !
थी नींद नहीं आयी क्षणभर भी, जीवन में उसके, प्रियतम !
झरती रहती आँखें, ज्वाला हृत्तल में थी जलती, प्रियतम !
था पास नहीं कोई उसके, जो अश्रु पोंछ दे, हे प्रियतम !
।। ९ ।।

रहते कुञ्चित काले हरदम, थे केश खुले उसके, प्रियतम !
भीगा रहता परिधान, नील नयनों की धारा से, प्रियतम !
उन जीर्ण हुए वातायन के, रन्ध्रों से लगकर, हे प्रियतम !
देखा करती थी निर्निमेष, लोचन से अम्बर को प्रियतम !
।। १०।।



भ्रम होता सहसा उसे कभी, रवि उदित हो चुका, हे प्रियतम !
सुनने लगती कलरव खग का, भ्रमरों का गुञ्जन, हे प्रियतम !
स्वर चातक का 'पी कहाँ' तथा कोयल की 'कू-कू',हे प्रियतम !
श्रवणों में आकर लग जाती, होने प्रतीति दिन की, प्रियतम !
।। ११ ।।

आशा की बेलि हरी होती, वे आयें आज कहीं, प्रियतम !
मिलने का फिर अनुभव करती, रस-सरिता में बहती, प्रियतम !
उठता वह बोल पहरुआ खग, इतने में धीरे से, प्रियतम !
जगकर उस सपने से बाला, रोने लगती थी, हे प्रियतम !
।। १२ ।।



थी राजा की पुत्री बाला, स्वर्णिम दिन थे देखे, प्रियतम !
माता उसकी थी रानी, वह दृगपुतरी थी जिसकी, प्रियतम !
उसकी थी एक बहिन छोटी, प्राणों की छाया थी, प्रियतम !
उसका था एक बड़ा भाई, प्राणों का सहचर था, प्रियतम
।।१३।।
अगणित सहेलियों थीं उसकी, प्राणों की धारा थी, प्रियतम !
दासी-दासों का था समूह, थी प्राण बनी उनके, प्रियतम !
अगणित कुटुम्बि जन थे उसके, प्राणों की ऊर्मि हुए, प्रियतम !
पशु-पक्षी तक के प्राणों में, वह थी निवास करती, प्रियतम
।।१४।।



उद्यानों में, आरामों में, विहगी-सी थी फिरती, प्रियतम !
महलों में चञ्चल चपला-सी, हँसकर खेला करती, प्रियतम !
अपलक सब देखा करते, थे क्रीडा शैशव उसकी, प्रियतम !
न्योछावर जो न हुआ उस पर, था नहीं कहीं कोई, प्रियतम
।।१५।।

है बात एक दिन की, जब वह थी वर्ष सात की, हे प्रियतम !
मन में आया, जाऊँ वन में, मैं पुष्प चयन करने, प्रियतम !
उत्तर की और मनोहर था, वन एक विशाल घना, प्रियतम !
कल-कल निनादिनी के तट पर, शोभा का आकर, हे प्रियतम
।।१६।।



रहते थे मानो सदा वहीं, ऋतुराज-शरद दोनों, प्रियतम !
पर था निषेध उस कानन में, सबके जाने का, हे प्रियतम !
अनुमति राजा की लेकर ही, कोई जाता था, हे प्रियतम !
नृप को अपनी कुलदेवी के, दर्शन होते उसमें, प्रियतम !
।।१७।।

अतएव पूर्णिमा जब आती तिथि तथा अमावस की, प्रियतम !
थी उस बन की देती फेरी, जो प्रजा राज की थी, प्रियतम !
उनमें जिसकी अतिशय निष्ठा, देवी की होती थी, प्रियतम !
उसको दर्शन हो जाता था, प्रत्यक्ष दिव्य उनका, प्रियतम
।।१८।।



अतुलित पवित्रता का अनुभव तो, सबको ही होता, प्रियतम !
सब आ-आकर अपनी-अपनी, बातें कहते वे थे, प्रियतम!
नृप तनया ने थी सुनी वहीं, उनसे वन की गाथा, प्रियतम!
उत्कण्ठित अतः हुई वह थी, जाने के लिये वहाँ, प्रियतम
।।१९।।

वह जननी से आकर बोली, पीयूष भरे स्वर में, प्रियतम !
'कुछ फूल बीन लाऊँ में री! उस बन से' और हँसी, प्रियतम !
भर आँखें रानी की आयी, सुनकर फिर जब देखी, प्रियतम !
कैशोर वयस की लाली-सी, नव मुख पर पुत्री के, प्रियतम
।। २० ।।



लोचन के आगे नाच उठी, रानी के जीवन की, प्रियतम !
घटना प्राचीन, नवीन वधू, थीं बनी वहीं आयी, प्रियतम !
वह थी सुहाग की रात, मौन थे आर्य पुत्र बैठे, प्रियतम !
वे थीं बैठी, था झुका हुआ, सिर उनके चरणों में, प्रियतम
।। २१ ।।
जीवन संगिनी अलौकिक थी, सुन्दरी मिली, फिर था, प्रियतम !
दोनों में ही नव यौवन का उन्मेष; किंतु दोनों, प्रियतम !
हो गए विरत उन विषयों के, उन्मादी भोगों से, प्रियतम !
जागा अन्तस्तल में सहसा, ज्योतिर्मय भाव, अहो ! प्रियतम
।। २२ ।।



हम दोनों अभी इसी क्षण से, हो चुके समर्पित हैं, प्रियतम !
जो कृपामयी त्रिभुवन जननी हैं, उनके श्रीपद में, प्रियतम !
किंकरी और किंकर हम हैं, दोनों विक्रीत हुए, प्रियतम !
केवल उनकी ही सेवा, अब जीवन पर्यन्त करें, प्रियतम
।।२३।।

उनका आदेश भले जब हो, तब एक पुत्र बस, हो, प्रियतम !
जो परम्परा का नृपकुल की, निर्वाह वीर कर दे, प्रियतम !
पश्चात सदा के लिये लीन, हम हों श्री-पद-नख में, प्रियतम !
आदर्श रखें हम, जिसे प्रजा अपनाकर सुखी बने, प्रियतम
।। २४।।



इस निश्चय को लेकर उनने, कुछ मास बिताये थे, प्रियतम !
आयी जब रात सदाशिव की, उस बार शिशिर ऋतु में, प्रियतम !
आदर से दम्पति ने, ली थी दीक्षा, सद्‌गुरु ऋषि से, प्रियतम !
निगमागम सम्मत ली शिक्षा, आराधन पद्धति,की, प्रियतम
।। २५ ।।
हरिशयनी निशा मनोहर थी, अर्चन आरम्भ हुआ, प्रियतम !
थी त्रिपुरसुन्दरी की प्रतिमा, प्रासाद कक्ष में ही, प्रियतम !
अद्भुत सुवर्ण से विरचित थी; फिर था प्रभाव ऐसा, प्रियतम !
हो जाता स्वतः नमित सबका, सिर मन्दिर परिसर में, प्रियतम
।। २६॥



हो कहीं चित्त की वृत्ति, किंतु आते ही सीमा में, प्रियतम!
चाहे कोई कैसा भी हो, भावित होता सहसा, प्रियतम!
विस्मृत सब कुछ होकर, समाधि मानो लग जाती थी, प्रियतम !
प्रहरी ही होश कराता, यह कहकर 'दर्शन कर लो' प्रियतम
।। २७ ।।

लेकर अञ्जलि में पुष्प तथा पङ्किल लोचन से, हे प्रियतम!
जाकर जब अर्पित कर देता, अपने को श्रीपद मे, प्रियतम !
होता था भान तभी उसको, अग्रिम कर्तव्यों का, प्रियतम !
वे अहो! न जाने कब से थीं, राजित देवी कुल की, प्रियतम
।। २८ ।।



युवराज रूप में ही जब थे, वे वर्तमान राजा, प्रियतम !
ऋषितुल्य पितृचरणों की ले अनुमति, ली थी उनने, प्रियतम!
अपने ऊपर सँभाल, पूरी देवी की सेवा की, प्रियतम ।
उसके पहले भूदेवों के, द्वारा अर्चन होता, प्रियतम
।। २९ ।।

श्रद्धापूरित मन से यद्यपि, युवराज पूछते थे, प्रियतम!
भूदेवों से कुलदेवी का, इतिवृत्त पुराना, हे प्रियतम !
हँसकर पर वे कह देते थे-'हे वत्स बाट देखो, प्रियतम !
ये जगजननी बतलायेंगी, जो बतलाना होगा' प्रियतम
।। ३० ।।



फिर सभी व्यवस्था सेवा की, क्रमशः भूदेवों ने, प्रियतम !
अतिशय विनम्र युवराज, कुशल मतिमान धीर को ही, प्रियतम !
दी सौंप और मंगलमय कर, सिर पर रखकर उसके, प्रियतम !
'तेरी जय हो' कहकर सहसा, अन्तर्हित सभी हुए, प्रियतम
।। ३१ ।।

तब से हो गये वर्ष सत्तर, नौ मास और दिन दो, प्रियतम !
अविराम भाव संवलित हुए, नृप ने की थी अर्चा, प्रियतम!
संबोधन 'सहधर्मिणि' का भी, अक्षरशः सत्य घटा, प्रियतम !
रानी के जीवन में भी, है तुलना न कहीं जिसकी, प्रियतम
।। ३२ ।।



अब पुनः वही हरिशयनी की, रजनी थी उजियारी, प्रियतम !
सर्वथा निरघ्न गगन था, सब हँसते-से थे तारे, प्रियतम!
अन्तरसत्त्वा थी रानी फिर, मन्त्री की पत्नी भी, प्रियतम!
थीं हुई त्रिपुरसुन्दरी तुष्ट, बहुकाल-अर्चना से, प्रियतम
।। ३३ ।।

नौ मास और कुछ दिन पहले, इस देवशयन से ही, प्रियतम !
प्रत्यक्ष महादेवी का था, दर्शन-सौभाग्य मिला, प्रियतम !
रानी को फिर समानशीला, मन्त्री की दारा को, प्रियतम !
थीं हँसी महामाया एवं कह गयी स्वयं यह थीं, प्रियतम
।। ३४।।



'आये वह राजपुत्र, इससे पहले गृह मन्त्री का, प्रियतम !
मेरी क्रीडा की भूमि बने, आरम्भ करूँ मैं ही, प्रियतम !
जो प्रथम कृत्य रंगस्थल का, है नटी किया करती, प्रियतम !
फिर हो लीला, होती है जो चिन्मयी कदाचित् ही' प्रियतम
।। ३५ ।।

उत्सव था आज नृपतिपुर में, अवनीश भवन में भी, प्रियतम !
थी देर घड़ी आधी की ही, होने में मध्य निशा, प्रियतम !
नीराजन लिये खड़े नृप थे, रानी थीं पास खड़ी, प्रियतम !
थीं महात्रिपुरसुन्दरी अहो! सचमुच अलसायी-सी, प्रियतम
।। ३६ ।।



दौड़ी आयी थी कहने यह, दासी मन्दिर में ही, प्रियतम !
हैं प्रसव-वेदना-सी अनुभव, कर रही सचिव गृहिणी, प्रियतम!
श्री-प्रतिमा के दृग कमल अहो!, क्षणभर के लिये हिले, प्रियतम !
संकेत मिला था रानी को, जाने के लिये वहीं, प्रियतम
।। ३७ ।।

छूकर वे श्रीपद नख को, थीं चल पड़ी तुरन्त तथा, प्रियतम !
पहुँची उस सदन कक्ष में, थीं जैसे, बस, भान हुआ, प्रियतम !
है ज्योति अंशुमाली की, सच फैली सर्वत्र वहाँ, प्रियतम !
दासी की आँखें बन्द हुई, भीतर वह जा न सकी, प्रियतम
।। ३८ ।।



मीलितनयना ध्यानस्थ हुई, मन्त्री की जाया की, प्रियतम !
गोदी में प्रगट जगन्माता, हो गयी अचानक थीं, प्रियतम !
अप्रतिम सुन्दरी नवजाता, कन्या का वेष लिये, प्रियतम !
केवल रानी ही देख सकीं, अद्भुत उस घटना को, प्रियतम
।। ३९ ।।

क्षणभर में फिर उस पर, निर्मल आवरण एक आया, प्रियतम !
वे नाल आदि वस्तुएँ सभी, निर्मित हो गयीं वहाँ, प्रियतम !
रो उठी बालिका भी वह, अब इस भाँति उधर मानो, प्रियतम !
नारायण निद्रित हुए इधर, वे नारायणी जगीं, प्रियतम
।।४० ।।



कन्या के मुखमण्डल पर थी, मोहनता श्री-सी ही, प्रियतम !
अङ्गों में भी वैसी ही थी, दुस्सह-सी प्रभा भरी, प्रियतम !
रोना उसका उस समय अहो!, श्रुति-मधुर तन्त्ररव था, प्रियतम !
दर्शक आनन्द विमूढ़ हुए, खिल उठी प्रकृति सारी, प्रियतम !
।।४१।।

आयी श्रावण कृष्णा की थी, फिर तीज वार बुध था, प्रियतम !
रवि के अस्ताचल जाने में, घटिका थी पाँच बची, प्रियतम !
नादित धौंसे के शुभ रव से, प्रासाद हुआ सहसा, प्रियतम !
नृप-तनय-जन्म का मंगलमय, संवाद मिला सब को, प्रियतम
।।४२।।



नृप बालक के गोरे मुख की, शोभा किस भाँति कहूँ, प्रियतम !
देखी जिनने बोले न कभी, बोले वे लख न सके, प्रियतम !
दो भुजा और नीलिमा मात्र, आवृत कर माया से, प्रियतम !
सचमुच वे मधुसूदन ही थे, आये शिशु-वेष धरे, प्रियतम
।।४३।।
दो पर्वत की द्रोणी में थी, फैली जो राजपुरी, प्रियतम !
बाइस दिन तक कण-कण में था, उसके कम्पन सुख का, प्रियतम !
रत्नों की ज्योति रात में थी, इङ्गित करती, मानो, प्रियतम!
नृप तनय-अमात्यसुता के शुभ, निर्मल भावी यश का, प्रियतम
।।४४।।



महारानी और सचिव गृहिणी, दोनों सहोदरा थी, प्रियतम !
थी चाह बहिन की, हो उत्सव, नृपसुत आ जाय तभी, प्रियतम !
नृप-कुल-देवी की भी, रुचि थी ऐसी ही, इसीलिये, प्रियतम !
थी उत्समयी वह नित्य सुखद, अँधियारी तीज बनी, प्रियतम!
।।४५।।

बीता फिर वर्ष और आयी भादों शुक्ला षष्ठी, प्रियतम !
रवि वासर था, थे भानु उदित, दो घड़ी हुए पहले, प्रियतम !
रानी की एक बहिन जो थी, मौसेरी नाते में, प्रियतम !
शारदा सही जो थी, उसको कन्या थी एक हुई, प्रियतम
।।४६।।



जो महात्रिपुरसुन्दरी, अघट-घटना-पटीयसी हैं, प्रियतम !
चिन्मयी ज्योति उनकी ही थी, कन्या बनकर आयी, प्रियतम !
होने वाली लीला जो थी, जिसमें थीं नटी बनी, प्रियतम !
वे स्वयं, सचिव के गृह, उसका संविद्-पट उठा वहाँ, प्रियतम !
।। ४७।।

वह था संयोग, महारानी मिलने आयी थीं, हे प्रियतम!
भगिनी से, प्रेरित होकर ही कुलदेवी के द्वारा, प्रियतम!
गोदी में तेरह मास तथा सत्रह दिन का शिशु था, प्रियतम !
मंगलमय चरण पड़े जब थे, उनके उस पत्तन में, प्रियतम
।। ४८ ।।



रानी की अनुजा भी, उनके थी साथ लिये पुत्री, प्रियतम !
दोनों के ही समक्ष, अभिनव था दृश्य खुला पहला, प्रियतम !
क्रीडारत वे दोनों शिशु थे, हाथों में हाथ लिये, प्रियतम !
तीनों बहिनें बैठी प्रमुदित थीं, देख रही उनको, प्रियतम !
।।४९।।

इतने में ही मानो सहस्र, उग उठे दिवाकर थे, प्रियतम !
रानी की बहिन तीसरी के, उर-उदर-लोचनों में, प्रियतम !
हो गयी प्रभा परिणत तुरन्त, बालिका-रूप में थी, प्रियतम !
फिर सरक अङ्क से पड़ी, और शिशुओं में जा बैठी, प्रियतम !
।। ५० ।।





सीमा विहीन अचरज में थीं, डूबी तीनों बहिनें, प्रियतम !
है स्वप्न-घटित घटना, अथवा हो रही सत्य यह है, प्रियतम !
बन गया असंभव था, निर्णय कर लेना वहाँ इसे, प्रियतम !
जडिमा प्रत्येक रोम में थी, तीनों के भर आयी, प्रियतम !
।। ५१ ।।

यन्त्रित-से हुए, उधर शिशु, वे थे खेल लगे करने, प्रियतम !
शाखा-चन्द्रमा-न्याय से ही अभिराम दृश्य कह दूँ, प्रियतम !
दृग नचा-नचाकर तीनों ही, क्रमशः माताओं के, प्रियतम !
कण्ठों से लगकर फूल उठे, हँस-हँसकर मुदुल हँसी, प्रियतम
।। ५२ ।।



'मेरी मैया है, अहो! नहीं, मेरी मैया यह है' प्रियतम !
अप्रतिम मधुर वाणी यह थी, तुतलायी गूंज उठी, प्रियतम !
केवल अलिन्द में नहीं, भूत-भावी त्रिभुवन जन के, प्रियतम !
प्राणों में, जो हैं जुड़े हुए, तुम नित्य नील घन से, प्रियतम !
।। ५३ ।।

आखिर जब बात परस्पर यह, तीनों की तीनों ही, मैया हैं, प्रियतम !
तीनों शिशुओं ने ली मान, फुल्ल दृग से, प्रियतम !
मधुमय, अनन्त सुखमय, पावन कौतुक, वह बदल गया, प्रियतम !
आँखें बदली माताओं की, सुन करके क्रन्दन-सा, प्रियतम
।।५४ ।।



वैसी ही माया फैल गयी, वैसी प्रतीति सबको, प्रियतम !
होने लग गयी, लोकवत् ही मानो वह जन्मी थी, प्रियतम !
आनन्द सिन्धु उमड़ा, सब कुछ जन्मोचित कृत्य हुए, प्रियतम !
विस्मित वे किंतु तीन जननी, रह-रहकर हो जातीं, प्रियतम !
।। ५५ ।।
पूनो तक रानी वहीं रही, परिवा के दिन सहसा, प्रियतम !
शङ्कित सब हुए, नगर न कहीं हो जाय नष्ट कल ही, प्रियतम !
नररूप बने मनुजादों का, दल था आनेवाला, प्रियतम !
अतएव महारानी ने दी, यह राय-'सभी चल दो, प्रियतम !
।। ५६ ।।



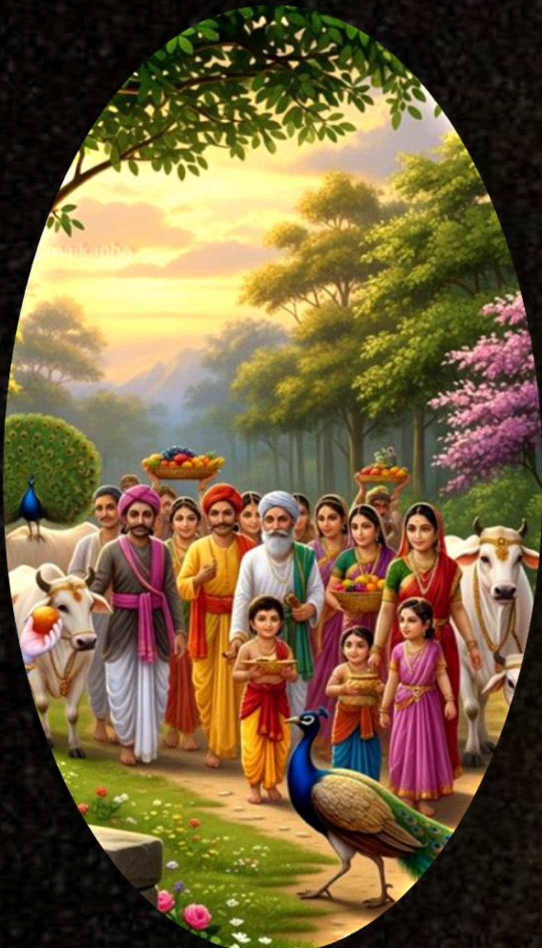
सर्वथा असंभव है उनसे, भिड़कर हम जयी बनें, प्रियतम !
है नगर निरापद केवल वह, मेरा ही भूतल में, प्रियतम !
अनुकम्पा है जगदम्बा की, साहस न किसी में है, प्रियतम !
जो करे अनिष्ट वहाँ के, लघु उन कीट-भृङ्ग का भी, प्रियतम !
।।५७।।

इसलिये तुरन्त वहीं, लेकर सबको जाऊँगी मैं, प्रियतम !
आबाल-वृद्ध पशु-पक्षी तक, कर दें प्रस्थान सभी, प्रियतम !
भय करें न तनिक, कहीं पथ में, वे ध्वंस करें हमको, प्रियतम !
हैं सदय जगन्माता मुझ पर, रक्षा कर लेंगी वे' प्रियतम
।। ५८ ।।



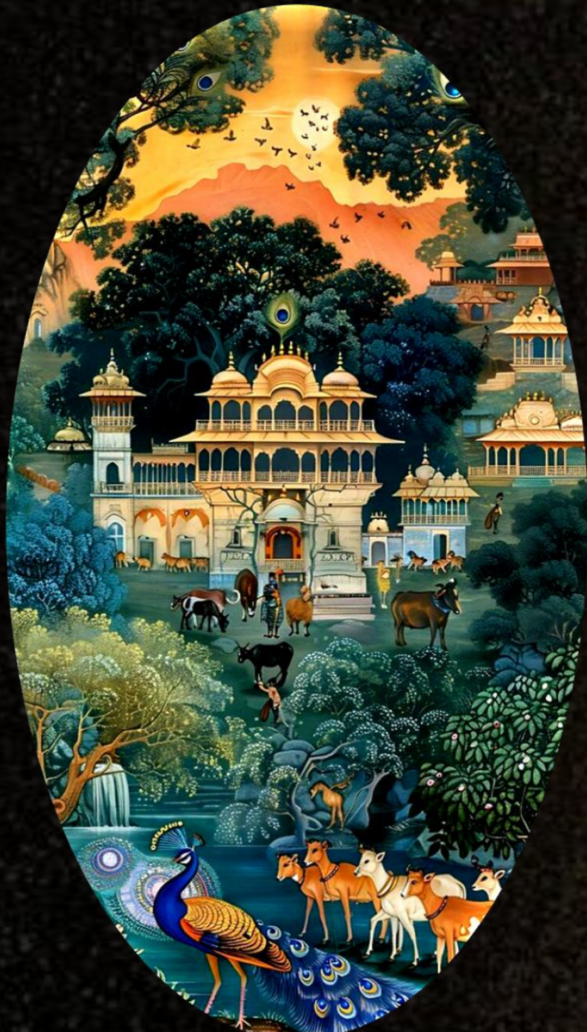
गति एकमात्र थी यही चलें, वे प्रातः से पहले, प्रियतम !
सामान शकट में भर, जितना संभव था भर लेना, प्रियतम !
लेंगे सँभाल आकर फिर यदि, संभव होगा आना, प्रियतम !
ऐसा निश्चय करके, होकर निर्मोही जड़ धन से, प्रियतम
।।५९।।

इस भाँति विदा करके सबको, सबके पीछे रानी, प्रियतम !
कहकर 'जय देवी दयामयि, जय जगदम्बे जय ललिते' प्रियतम !
सुविशाल एक रथ में, दोनों बहिनों को शिशुओं को, प्रियतम !
ले साथ चलीं निर्भय मानों, भगवती जा रही हो, प्रियतम !
।। ६० ।।



वे अहो न जाने कैसे थे पहुँचे, सब-के-सब ही, प्रियतम !
केवल दो घड़ी लगी, एवं दीखी वह राजपुरी, प्रियतम !
सन्मुख जैसे स्वागत सबका, हँस-हँसकर थीं करती, प्रियतम !
सीमा पर खड़े महाराजा थे, मंगल कलश लिये, प्रियतम
।। ६१ ।।

विभुता का हुआ प्रकाश, सत्य अद्भुत उस नृपपुर में, प्रियतम !
सुन्दर-से-सुन्दर पृथक-पृथक्, सबको आवास मिला, प्रियतम !
सपने में भी उन सबको, जो सुख-सुविधा थी न मिली, प्रियतम !
वह मिली वहीं वे भूल गये, पहले निवासथल को, प्रियतम !
।। ६२ ।।



अवसान वर्ष का हुआ, पुनः आयी पावस ऋतु थी, प्रियतम !
अष्टमी भाद्र शुक्ला की थी, रानी थी पीहर में, प्रियतम !
मध्याह्न हुआ था नहीं अभी, थी देर दण्ड दो की, प्रियतम !
थे अचक महाराजा पहुँचे, अपने श्वसुरालय में, प्रियतम !
।। ६३ ।।

था उदर महारानी का, फिर तेजोमय परम बना, प्रियतम !
हेमन्त-सम्पदा से जब थी, भूषित यह धरा हुई, प्रियतम!
नौ मास पूर्व था मार्गशीर्ष, अष्टमी शुक्ल की थी, प्रियतम !
प्रातः की वेला थी, रानी देवी मन्दिर में थी, प्रियतम
।।६४।।



श्री-प्रतिमा के पद पर, जो थी कुसुमावलि पड़ी उसे, प्रियतम !
कर में ले दृग से छुला-छुला, अपसारित थीं करती, प्रियतम ।
थे नहीं अभी राजा आये, अर्चन के लिये वहीं, प्रियतम !
कर रही अकेली रानी थीं, पूजा की तैयारी, प्रियतम
।। ६५ ।।

दीखा यह अकस्मात उनको, हँस पड़ीं महादेवी, प्रियतम !
फिर अहो! उरस्थल उनका, था क्रमशः खुलता जाता, प्रियतम !
अञ्चल वह परदा-सा होकर, बायें दायें सरका, प्रियतम !
बन गया द्वार, उससे निकली, मन को हरने वाली, प्रियतम
।।६६।।



सुन्दरी अनिर्वचनीय एक, कन्या गोरी भोरी, प्रियतम !
रानी के कुन्तल की लट को, कर में लेकर बोली, प्रियतम !
'री मैया!' अहा ! सुधास्यन्दी स्वर, था मीठा कितना, प्रियतम !
रानी में चेतनता न रही, बाहर की किञ्चित् भी, प्रियतम
।।६७।।

भीतर की आँख किंतु, उनकी थी देख रही घटना, प्रियतम !
देखी उनने जो थी उसका, संकेत भले कर दूँ, प्रियतम !
द्रुम एक परम रमणीय खड़ा, पुष्पित कदम्ब का था, प्रियतम !
थी नित्य किशोरी एक, और था एक किशोर वहीं, प्रियतम
।। ६८ ।।



उन दोनों की ही ओर, दृष्टि करके जगदम्बा थीं, प्रियतम !
कहती-"हे सती! आज कर ले, दर्शन मेरे उर का, प्रियतम !
सच्चिदानन्द, असमोर्ध्व और जो भगवत्ता का भी, प्रियतम !
है सार-मूल मधुरिमा, यही नीली-पीली द्युति है, प्रियतम !
।।६९।।

रसमय, संविद्, केवल, अद्वय, जो नील-पीतमय है, प्रियतम !
यह नित्य हृदय मेरा, जिसमें हूँ लीन हुई रहती, प्रियतम !
लीला रस पीता हुआ नित्य, जो युग्म रूप में है, प्रियतम !
रहकर दो, नित्य एक जो है, दृग-विषय हुआ वह है, प्रियतम
।। ७० ।।



यह नित्य किशोरी ही तुझसे, बोली थी, 'री मैया!' प्रियतम !
पीयेगी दूध सुधामय यह, तेरे पयोधरों का, प्रियतम !
यह नित्य किशोर किंतु तेरी, जो प्राण सखी वह है, प्रियतम !
उसका पी लेगा दूध, तभी आयेगी यह पीने, प्रियतम
।। ७१ ।।

यह नित्य समाया रहता है, उसके प्राणों में ही, प्रियतम !
यह नित्य समायी रहती है, तेरे ही प्राणों में, प्रियतम !
तुम दोनों भूल गयी हो यह, इनकी ही इच्छा से, प्रियतम !
अब याद करा देती हूँ मैं, जय हो तुम दोनों की, प्रियतम
।। ७२ ।।



दिव्याति दिव्य सौरभ अनुपम, तेरे इन केशों से, प्रियतम !
हो रहा यहाँ प्रसरित अब है, आ चुके नृपति भी हैं, प्रियतम !
संकल्प पवित्र और उनके मन में, यह जाग उठा, प्रियतम !
सन्तति हो एक पुनः ऐसी, सुरभित अलकों वाली, प्रियतम
।। ७३ ।।
अनुभूति किंतु अपनी यह तुम, राजा से मत कहना, प्रियतम !
रोने जब फूट-फूटकर वे, रजनी में आज लगें, प्रियतम !
कहकर 'रानी हे! पतन हुआ, मेरा व्रत नष्ट हुआ' प्रियतम !
इतना-सा तब कहना-'जाकर, जगजननी से पूछो' प्रियतम !
।। ७४ ।।



दूँगी मैं बता दिखा बातें, आगे की पीछे की, प्रियतम !
प्रेरित मत किंतु भला करना, वे कहें पुनः उनको, प्रियतम !
सुख की प्रति पल नवीन लहरें, प्लावित तेरे नृप के, प्रियतम !
प्राणों को नित्य करें, सच है वाणी त्रिकाल मेरी" प्रियतम !
।। ७५ ।।

इतने में दृश्य तिरोहित यह हो गया, जगीं रानी, प्रियतम!
अर्चन में योग न दे पायीं, उस दिन पगली-सी थीं, प्रियतम !
था प्रथम पहर जब बीत गया, उस दिन की रजनी का, प्रियतम !
रानी-नृप शयन-भवन में थे, हो भावमग्न बैठे, प्रियतम
।। ७६ ।।



राजा के तन के कण-कण में, ऐसी थी ज्योति भरी, प्रियतम !
वाणी क्या जिसे कहे, मन भी छू पाया नहीं कभी, प्रियतम !
थे नयन निमीलित-उन्मीलित, रह-रहकर हो जाते, प्रियतम !
प्राणों में उनके संवेदन, कैसा था तुम जानो, प्रियतम !
।। ७७ ।।

दक्षिण कर रानी के उर पर, सिर पर कर वाम तथा, प्रियतम !
भावाभिभूत नृप ने जैसे, था रखा यन्त्रवत् ही, प्रियतम !
संक्रमित उसी क्षण तेजपुंज, रानी के अङ्गों में, प्रियतम !
हो गया, तुरन्त सिमटकर फिर, उदर स्थल में जागा, प्रियतम
।। ७८ ।।



संज्ञा विहीन अवनीश हुए, रानी की गोदी में, प्रियतम !
थे पड़े तीस पल तक, जगकर वैसे ही फिर रोये, प्रियतम !
उन महिमामयी जगत्रय की, जननी ने तब उनको, प्रियतम !
दिखला दी भूत-भविष्यत की घटना, वे मुग्ध हुए, प्रियतम
।। ७९ ।।
उसका ही था परिणाम, नृपति थे अकस्मात आये, प्रियतम !
आया-जन्मस्थल में, स्वागत करने के लिये अहा! प्रियतम !
असमोर्ध्व महा महिमामय के, प्राणों की देवी का, प्रियतम !
बेटी हो उनकी प्रकट, अभी होने वाली जो थीं, प्रियतम
।। ८० ।।



केवल नृप नहीं, धरा के, जो मस्तकमणि मुनिगण थे, प्रियतम!
जो स्वर्लोकों के, भुवर्लोक, पन्नगतल तक के थे, प्रियतम!
प्रेरित हो अन्तर्यामी से, दोडे आये सब थे, प्रियतम !
जैसे थे प्रायः वैसे ही, कुछ रूप धरे भी थे, प्रियतम
।। ८१ ।।

थे तपन गगन में चमक रहे, जन-सुखद अतीव बने, प्रियतम !
अवनी प्रतिपल ही थी धारण, कर रही नयी सुषमा, प्रियतम !
वर्षा ऋतु थी, पर सलिल वहाँ, सर-सरित निर्झरों का, प्रियतम !
दो घड़ी हुई, था बना अतुल, उज्ज्वलतम मोती-सा, प्रियतम
।।८२।।



शीतल-सुगन्ध-मन्थर समीर, छू-छू करके सबको, प्रियतम !
कानों में था कहता मानो,-'देखो धीरे-धीरे, प्रियतम !
रस लहर एक-से-एक बडी, इस भावसिन्धु में है, प्रियतम !
आने वाली, तुम अवगाहन, निरवधि करते रहना' प्रियतम
।।८३।।
थे अश्व किरणमाली-रथ के, जब ठीक मध्य नभ में, प्रियतम !
आये, बस, उसी सन्धि पर, थी आयी कन्या नृप की, प्रियतम !
मंगलमय परम जुड़े जब थे, कालोचित योग सभी, प्रियतम !
रसराज और जब महाभाव, दोनों थे एक हुए, प्रियतम
।।८४।।



कोई न चितेरा हुआ यहाँ, आगे न कभी होगा, प्रियतम !
जो चित्र सलोनी नृप की, उस बेटी का सही लिखे, प्रियतम !
लोचन जिनके हों तुम, मेरे प्राणाधिक के पद की, प्रियतम !
नख-चन्द्र-चन्द्रिका से भासित, वे देख भले ही लें, प्रियतम
।।८५ ।।

दो बार अहो! वह मुख शोभा, फिर वह उमंग धारा, प्रियतम !
प्राणों में जो थी उमड़ चली, देखी जिनने उनके, प्रियतम !
एवं उसका प्रकाश बाहर, कैसे था हुआ वहाँ, प्रियतम !
निर्लज्ज हुई उस ओर भला, किञ्चित् कह आयी हूँ, प्रियतम
।।८६।।



अब तो इतना-सा कहूँ, अहा! उन दिव्य अतिथियों ने, प्रियतम !
रानी ने, बहिनों ने, अगणित चर-अचर लोचनों ने, प्रियतम !
कन्या को, रस के प्लावन को, देखा, बस, देखा था, प्रियतम !
था काल मकर, रानी लौटीं, पीहर से ले पुत्री, प्रियतम !
।। ८७ ।।

अब गये पचीस महीने, शुभ दिन सात, अष्टमी से, प्रियतम !
प्रातः से लेकर जब नूतन, होता प्रभात फिर था, प्रियतम !
उन आठों पहरों में प्रतिपल, नृप नगरों में जो थीं, प्रियतम !
भावों की नव तरंग उठती, संभव है क्या कहना, प्रियतम
॥ ८८ ॥



जो हो, इतने दिन की जब वह, हो चुकी लाडिली थी, प्रियतम !
थे महीपाल के प्राणोपम, जो एक धर्मभाई, प्रियतम !
'गोपेश' अहो! जिनकी पदवी, विख्यात भुवन में थी, प्रियतम !
हो रहा शरद पूनों का था, उत्सव उनके गृह में, प्रियतम
॥ ८९ ॥

जिस दिन वह नृपति तनूजा, थी अवनी तल पर आयी, प्रियतम!
उसके ही पंद्रह दिवस ठीक, पहले उस रजनी में, प्रियतम !
उन गोपवर्य को महामहिम, ऐसा था पुत्र हुआ, प्रियतम !
जो था अहीर-कुल-उजियारा, सबके दृग का तारा, प्रियतम
।। ९० ।।



तब से उन धर्म भाइयों ने, निश्चय था किया यही, प्रियतम !
ये शरद, वसन्त, सभी ऋतु में, होते उत्सव जो हैं, प्रियतम !
आगे अब हम सर्वदा, करें दोनों कुल मिलकर ही, प्रियतम !
वे भले वनस्थल में हों, या नृपभवन किसी में हों, प्रियतम !
।। ९१ ।।

इसलिये नृपति थे सपरिवार, आये अहीरपुर में, प्रियतम !
आयी थी प्रजा और तो क्या, दस दिन बय का शिशु भी, प्रियतम !
मानो नृपपुर उठ आया था, पूरा-का-पूरा ही, प्रियतम !
उन गोप-नगर-नर-नारी का, उत्साह निराला था, प्रियतम
।।९२ ।।



गोपेश और अवनीश अभी, नारायण विग्रह का, प्रियतम !
चौसठ उपचारों से अर्चन, करके कृतकृत्य हुए, प्रियतम !
उद्दाम नृत्य के सहित अहो! थे नाम गान करते, प्रियतम !
स्वर-में-स्वर सभी मिलाकर, थे वैसे ही पुरवासी, प्रियतम
।। ९३ ।।

बीती ही थी वह अर्ध निशा, पल पाँच हुए, बस, थे, प्रियतम !
गोपेश-पुत्र को ले आयीं, रानी की बहिन वहाँ, प्रियतम !
चञ्चल बालक वह उतर पड़ा, जल्दी से गोदी से, प्रियतम !
भय हीन सदा वह था, झट से घुस पड़ा भीड़ में, हे प्रियतम
।। ९४ ।।



वह नृपति पुत्र को 'श्रीभैया', संबोधित था करता, प्रियतम !
गोपेश-वसन को खींच, चपल कर से, हँसकर बोला, प्रियतम !
'बाबा! भेजा है मैया ने मुझको, तुमसे कह दूँ, प्रियतम !
श्रीभैया को है एक हुई, छोटी फिर बहिन अभी' प्रियतम
।। ९५ ।।

उस बालक की वाणी में था, टोना-सा भरा सदा, प्रियतम !
वह भाव-समाधि अहो! सबकी, टूटी निमेष में ही, प्रियतम !
नारायण का वह शारदीय उत्सव, उन नरपति की, प्रियतम !
कन्या की महा बधाई में, परिणत हो गया वहाँ, प्रियतम
।। ९६ ।।



इस भाँति महारानी क्षण में, मानो हों घटी अभी, प्रियतम !
इन उपर्युक्त घटनाओं को, थीं देख गयी फिर से, प्रियतम !
'मैया! क्या है तू सोच रही', कहकर जब पुत्री ने, प्रियतम !
उनके अञ्चल को खींचा था, टूटा तब सच सपना, प्रियतम
।। ९७ ।।

पुत्री के अधर-कपोलों पर, वत्सलता के रस से, प्रियतम !
पूरित वह चिह्न अनेक बार, अङ्कित कर फिर अपनी, प्रियतम !
छोटी बेटी को, सखियों को, जो वहाँ बड़ी की थीं, प्रियतम !
वैसे ही रस देकर, लेकर सबको थीं वे आयी, प्रियतम !
।।९८ ।।



अर्चन-मन्दिर में राजा थे, ध्यानस्थ हुए बैठे, प्रियतम !
रानी ने बतला दी उनको, दुहिता की जो रुचि थी, प्रियतम !
झर-झरकर लगे नयन बहने, नरपाल निहाल हुए, प्रियतम !
मानस तल में वह बात जगी, देवी की कही हुई, प्रियतम !
।।९९।।

'होकर जब सात वर्ष की यह, हँसकर इच्छा कर ले, प्रियतम !
मेरे बन में आने की, तब समझो यह खेलेगी, प्रियतम!
वह खेल अनन्त काल तक, जो त्रिभुवन थिरजङ्गम को, प्रियतम !
पावनतर, पावनतम कर-कर, निधि नित्य बने सबकी' प्रियतम
।। १००।।



गदगद थी गिरा, नृपति ने थी,
दी अनुमति जाने की, प्रियतम !
सबको भूषण परिधानों से,
रानी ने सजा दिया, प्रियतम!
वे चलीं तुरन्त उसी वन में,
प्रसरित सच हो जैसे, प्रियतम !
हो तरल पुराण नित्य कवि के,
नव मन की सुन्दरता, प्रियतम
।। १०१ ।।

जय जय प्रियतम



।। इति श्री प्रथम शतकम ।।

Designed By:
Dr. Girjesh Singh